शोध सारांश

ग्रामीण परम्पराओं का बदलता स्वरूप और महिलाएं

(विशेष सन्दर्भ उत्तर प्रदेश की महाराजगंज तहसील)

सन 1990 के बाद से गांव के स्वरूप और परंपराओं में काफी बदलाव आया है, जिसके कारण महिलाओं की स्थिति में भी एक बड़ा परिवर्तन हुआ है । एक तरफ कुछ पुरानी परम्परायें टूटी हैं तो दूसरी तरफ कुछ नई परंपराओं का जन्म भी हुआ है। अगर हम इन सारे धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं को देखें तो कई अन्य तथ्यों पता चलता है । इन्हीं सारे पहलुओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध कार्य करना चाहती हूँ । आज पूरी दुनियाँ एक गांव में तब्दील हो गया है। दूसरे प्रदेश और देशों के रीति रिवाज व परंपराओं के बीच जो आदान प्रदान हुआ है उनमें कुछ बदलाव भी हुआ है । कुछ व्याहरिक रीति-रिवाजों और परंपराओं का सिर्फ स्वरूप बदला है इसका मूल वही प्राचीन संदर्भों पर आधारित है । इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को बांधे रखना है। हमारे समाज में महिलाओं के ऊपर तमाम रीति-रिवाज को थोप गया है । ऐसा क्यों ? मेरा मानना है कि जब तक मानसिक तौर पर बदलाव नहीं होगा तब तक एक बेहतर समाज कि कल्पना करना संभव नहीं होगा। पहले जो परंपरायें थी, उसमें आज के आधुनिकीकरण में परिवर्तन या बदलाव भी हो रहा है । प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य इन्हीं तथ्यों को दिखाना है । इसमें कहीं न कहीं पितृसत्तात्मक समाज का स्वार्थ जुड़ा हुआ होता है। परंपराओं के थोपने के पीछे का कारण है पितृसत्ता को मजबूती प्रदान करना । पितृसत्ता को बरकरार रकने में धर्म व धार्मिक अनुष्ठानों का

महत्वपूर्ण योगदान होता है। धार्मिक परंपरा और रीति-रिवाज महिलाओं के दिलो-दिमाग में इस तरह बैठा दिया जाता है, जिससे महिलाएं स्वेछा से स्वीकार कर लेती हैं। यह पितृसत्तात्मक समाज उसी औरत को आदर्श महिला मानता है, जो औरत बगैर किसी प्रतिरोध के इन सारे पितृसतात्मक रिवाजों को स्वीकार कर लें। यह समाज उसी महिला को एक आदर्श माँ, आदर्श बहन, और पत्नी मानता है जो परूषों द्वारा बताए रास्ते पर बिना सवाल किए आँख बंद करके चलती जाए। जरा गौर कीजिए हर धर्म में औरत का दर्जा पुरुष से नीचे है करवाचौथ, हरतालिका, तीज, भाँवर यानी फेरे बिछुआ, पायल, सिंदूर, ब्रत औरतें अपने पति व बेटों की लंबी उम्र व स्वस्थ जीवन के लिए कमाना करती हैं। इसी तरह से अनेक ऐसी परंपरायें हैं जो महिलाओं पर थोप दी गई हैं और आज आधुनिक विश्व में इन सारी चीजें का तेजी से विकास भी हो रहा है। ऐतिहासिक विचार धाराओं की सीमाएं स्पष्ट होने लगी है, किसी एक वैचारिक ढांचे में ढलकर सोचना जरा कठिन होता है। ऐसे में सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव व भूमंडलीकरण पारिवारिक संरचना को भी बदलता है।

1. वर्तमान समय में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सास्कृतिक परिस्थितियों में किस-किस तरह से बदलाव हो रहे हैं?
2. क्या ग्रामीण महिलाओं में प्रतिरोध और संघर्ष के स्वर दिखाई दे रहे हैं?
3. क्या ग्रामीण महिलाएं रुढ़िवादी परंपराओं से लड़ने में सक्षम हुई हैं या हो पा रही हैं?
4. आज के वर्तमान समय में परंपरा को तोड़ने के लिए कौन-कौन से कारक काम क रहे हैं इसका पता लगाना

5. महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा में ग्रामीण परंपरा एवं बदलते स्वरूप के कारण एवं प्रभावों का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण परंपराओं में महिलाओं के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों का अध्ययन करना।
7. वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की शैक्षणिक उन्नति के कारण पुरातन परंपरा में बदलाव प्रदर्शित हो रहे है ।
8. महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा में कमी होना और हिंसा के बिरुद्ध प्रतिरोध के स्वर मजबूत हो रहे है ।
9. ग्रामीण महिलाएं धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक सभी क्षेत्रो में नई कृतिमान स्थापित कर रही है ।

स्त्री अध्ययन महिलाओं का व्यक्तिगत, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, अध्ययन हैं। इसका क्षेत्र व्यापक और विशाल है। इसके शोध में नए-नए आयाम सन्निहित हो रहे हैं। अत: शोध की अनेक दिशाएं हो सकती हैं। प्रस्तुत शोध के लिए शोध प्रविधि के रूप में गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध विषय को ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीक, तथा नारीवादी प्रविधि के माध्यम से पूरा किया गया है। संक्षेप में हम यह कह सकते है, कि किसी भी समाज में लघु और बृहत परंपरायें एक साथ जीवित रहती हैं। एक के महत्व को दुसरे की अनुपस्थिति में आंका नहीं जा सकता है। साथ ही साथ ग्रामीण और सर्वव्यापीकरण की प्रक्रियाएं अपना-अपना कार्य करती रहती है। दोनों एक सिक्के के दो पहलू है। अस्तु इन दोनों का प्रभाव परम्परा, धार्मिक विश्वास और कर्मकंडों पर पड़े बिना नहीं रहता है। आज के सन्दर्भ में अगर हम देखते है तो पढ़ी-लिखी महिलाएं इन परम्पराओं और रुढ़िवादियों से इतनी ग्रसित हैं कि वह इतनी जागरूक होने के बावजूद भी इन चीजों से बाहर

नहीं निकल पा रही है। इस तरह से हम देखते हैं कि पवित्रता की अवधारणा में महिला को केन्द्रित बनाया गया है अधिकांश धार्मिक कर्मकांड महिलाओं को ही करने होते है पति भाई और बेटे की लम्बी उम्र के लिए महिलाओं को कष्टकारी व्रत-उपवास करने होते है, जब कि धर्म के नेतृत्वकर्ता और नियंता पुरुष होते है असल में वे महिलाओं को घरों में कैद करके रखना चाहते हैं और अपने मनमाफिक संस्कृति को महिलाओं के ऊपर थोपना चाहते हैं। लेकिन आज समय बादल रहा है। सभी औरते मरती नहीं वे देर से सही पर बढ़ते हुयें तापमान को पहचानना सीख गई हैं। वह खतरे की आहट को सुन रही है। अपने जिन्दा होने के मूल्य को समझ रही है। मानसिक यातना और बारीक़ हिंसा को पहचान कर उन पर सवाल खड़ा कर रही हैं और इन सब से बाहर निकलने का हौसला भी दिखाती हैं। अपनी खोई हुई आस्मिता और मानवीय पहचान को दुबारा संवारती हैं। स्त्री शिक्षा, स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्री को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से सम्बन्धित है। दुसरे रूप में यह स्त्री के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पध्दति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुर्नजागरण काल के दौरान स्त्री को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुयी थी। लेकिन आज शिक्षा का महत्व सभी जगह होना जरूरी है।

Research summery

Changing the Nature Of Rural Traditions And Women(Special Reference To Uttar Pradesh Of Maharajganj Tehsil)

Since 1990, the structure and natures of village have been modified from which status of women has changed at mass level. While on the One hand some old traditions are broken, there are also some new traditions seeded on the other. If we see all these religious, social and cultural aspects, we find many factors and facts. Keeping all these aspects in mind. I want to present research. Today, whole world has been changed in a global village. Some interchanged Customs and tradition of one another have been also changed. Some behavioural customs and traditions are changed only in form but still these customs and tradition are based on ancient references. Its main purpose is to retention of women. In our society, all customs and traditions are imposed on women. Why so? I think unless we do not change our selves mentally Until it is difficult to image a better society. All tradition of old age has been changed by the influence of modernization. The main purpose of this research

is to show these facts. Somewhere selfishness is jointed in patriarchal society. The reason behind this is to impose all customs and traditions on women and give more and more strength to patriarchy. Religion and religious rituals are contributed to stand patriarchy. Religions traditions and customs are implanted in women mind that they accept them volitionally. This patriarchy society consider those women as ideal who accept all the customs without any resistance. This society consider those women as a ideal mother, ideal sister and ideal wife who follow all norms blindly which has been made by men. in all religion status of women is down. Karawachauth, haretalika. Teej, bhanwar, fere bichhua, payal, sindur and fast accepts for long life and healthy life for husbands and sons. Similiarly many tradition, which has been imposed on women and in contemporary time these stupid customs are developed and nourished. The idea of historical thought shows clearly. Just think in a conceptual framework very difficult. Thus socio-cultural impact and globalization changing the family structure.

1. Which types of changes are happening in rural women like social. Economic, political and cultural?
2. Are the voice of resistance and struggle showing in rural women.
3. Are the rural women able struggle with orthodox?
4. Which are factors doing work for break the tradition in present time? Identify them.

5. To study the violence against women and cause and effect in rural tradition.
6. To study the religious, social, economic and political conditions in rural traditions.
7. Due to educational advancement in rural women, the archaic tradition are changing.
8. Reduction in women violence and resistance against violence are getting stronger.
9. Real women get new achievement in religious, social, economic, political and family areas.

Women studies is study of women's individual, political, social and family. It has broad and enormous area. New dimensions are inbuilt Therefore several direction could be for research. qualitative method is used for this research. This research has done by the medium of historical, sociological and feminist methodology. In short we can say in any society small and large traditions can exist together. In absence of one, the importance of another can not be underestimated. Additionally, the process of rural and universalization do their work together. both are two side of one coin. Therefore. The effect of these traditions religious belief and rituals are effected each other. In present context, if we see educated women are suffering from tease traditions and orthodox and they can't escape from these things. In this way we see in the concept of purity women have been centralised. More rituals are done by women like troublesome fasting for long life of

her husband, brothers and sons. But the controller and leaders are men. They want to keep women in house and they imposed rituals according them in home. But, today's time is changing. All women are not dying like that, they are learning to recognize demand of time. They are listening the sound of dangerous. They understand the value of life. They are raising the question after distinguished the Mental torture and minute violence. They are showing the courage and get away from these thing.

Women education is concept of women and education connecting essentially each other. Women education has two forms. One is to include women in education as men and second one is, it references to the special education system for women. During middle and renaissance period the concept of education was developed different, women and men both were educated differently. But the importance of education should be necessary for all.